

इन्जिनियर, राकेश कर्की

लस □ न्जेलस

देश वदेश जताततै

यो कस्तो उमंग

आयो फगुन होलीके

थरथिरकि रङ्ग

□ क्छापसमा मल्लिर

भौंडिमा रमाइरहे

मौसम नै मज्जा आनन्द

रङ्गमै डुबाइरहे

बादलके स्वागत सूर्यके मुस्कन

जगतमै हाँसो छ

प्रेम(रङ्ग भरेर बेलुन प्रहार

खेलमा जो चासो छ

पचिचिचि पचिकरी फेहरा

वर्षा भो रङ्गकै

नाचे सङ्गीतमै छमछम

नशा त्यों भाडकै

सदभावके अबरि दलेर

सपुतरङ्गी रङ्गौली

बाडेर रङ्गीन परिती

आउ खेलौं होली